Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with*
International Impact Factor 8.357
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2507S01V13P007

e-ISSN No. 2394-8426
Special Issue on Scientific Research July'25
Issue–VII(I), Volume–XIII

डॉ. बी.आर. अम्बेडकर के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आर.एस.एस.) पर विस्तृत विचार: एक आलोचनात्मक विश्लेषण

प्रा. डॉ. धिरजकुमार नजान,
सहयोगी प्राध्यापक,
मो. 7875635888
ईमेल: profdlnajan994@gmail.com
डॉ. गोपाळराव खेडकर महाविद्यालय,
गाडेगाव (तेल्हारा) जि. अकोला

*** परिचय:**
यह संशोधित लेख डॉ. बी.आर. अम्बेडकर के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) पर दृष्टिकोण का आलोचनात्मक परीक्षण करती है, जो सत्यापित ऐतिहासिक विश्लेषण और समकालीन शोध पर आधारित है। इसका मुख्य फोकस अम्बेडकर की हिंदू राष्ट्रवाद की आलोचना, जाति व्यवस्था के विरोध, और अम्बेडकर के सामाजिक सुधार एजेंडे और आरएसएस के सांस्कृतिक एकता के दृष्टिकोण के बीच वैचारिक तनाव और बातचीत पर है। सभी अंतर्दृष्टि सख्ती से प्रदान किए गए सारांशों और स्रोत सामग्रियों पर आधारित हैं।
भारतीय सामाजिक और राजनीतिक इतिहास में डॉ. भीमराव रामजी आंबेडकर का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण और अद्वितीय है। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन शोषित, वंचित, दलित और पिछड़े वर्गों के अधिकारों की रक्षा और उनके सामाजिक उत्थान के लिए समर्पित कर दिया। भारतीय संविधान के मुख्य शिल्पकार के रूप में, उन्होंने भारत को एक आधुनिक, लोकतांत्रिक, और धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र के रूप में दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

वहीं दूसरी ओर, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) की स्थापना 1925 में एक सांस्कृतिक संगठन के रूप में हुई थी, जिसका उद्देश्य हिंदू समाज में एकता, संगठन और राष्ट्रभक्ति की भावना का प्रसार करना था। संघ ने अपनी शाखाओं के माध्यम से एक अनुशासित, राष्ट्रनिष्ठ कार्यकर्ता वर्ग तैयार किया।

डॉ. आंबेडकर और आरएसएस – ये दोनों ही शक्तियाँ भारत के सामाजिक परिदृश्य को प्रभावित करने वाली प्रमुख विचारधाराएँ रहीं। दोनों ने समाज के पुनर्निर्माण और राष्ट्र की उन्नति के लिए प्रयास किए, लेकिन उनकी दृष्टि, पद्धतियाँ और मूलभूत सिद्धांत अनेक मामलों में एक-दूसरे से भिन्न थे।

डॉ. आंबेडकर ने आरएसएस की अनुशासनप्रियता और संगठनात्मक क्षमताओं की सराहना की थी, लेकिन साथ ही उन्होंने हिंदू राष्ट्र की अवधारणा, जातिव्यवस्था के प्रति संघ की अस्पष्ट भूमिका और बहुसंख्यकवाद की राजनीति पर गंभीर आपत्ति भी दर्ज की थी। उनका मानना था कि जब तक समाज में जातिगत विषमता है, तब तक सच्ची समानता और स्वतंत्रता संभव नहीं।

इस प्रस्तावना के माध्यम से हम यह समझने का प्रयास करेंगे कि डॉ. आंबेडकर का आरएसएस के प्रति दृष्टिकोण क्या था — कहाँ उन्होंने सहमति दिखाई, और किन बिंदुओं पर उन्होंने विरोध प्रकट किया। यह विषय न केवल ऐतिहासिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि वर्तमान भारत की सामाजिक-राजनीतिक दिशा को समझने के लिए भी अत्यंत आवश्यक है।

* मुख्य कीवर्ड्स (Key Words):
डॉ. बी. आर. आंबेडकर, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS), हिंदू राष्ट्र, जातिप्रथा, अनुशासन, बौद्ध धर्म में धर्मांतरण, दलित मुक्ति आंदोलन, गोलवलकर गुरुजी, संविधान निर्माता, धर्मनिरपेक्षता, हिंदुत्व विचारधारा, सामाजिक न्याय, नागपुर दौरा 1939, ब्राह्मणवाद का विरोध, समानता, बंधुत्व, स्वतंत्रता, जातीय भेदभाव, बौद्ध धम्म दीक्षा, संघ शाखा, डॉ. हेडगेवार, वैचारिक असहमति.

*** अम्बेडकर की मूल वैचारिक प्रतिबद्धताएं**

1. कानूनी और सामाजिक सुधार

1.1) जाति उन्मूलन: डॉ. अम्बेडकर जाति आधारित पदानुक्रम और भेदभाव के उन्मूलन के लिए सबसे प्रमुख वकील थे, जिसे उन्होंने हिंदू सामाजिक और धार्मिक रूढ़िवाद में गहराई से जड़ित देखा।

1.2) हिंदू धर्म का अस्वीकरण: अम्बेडकर ने हिंदू धर्म के मूल ग्रंथों और प्रथाओं को उनके द्वारा श्रेणीबद्ध असमानता को स्वीकृति देने के कारण अस्वीकार किया, जिससे 1956 में उन्होंने और लगभग आधे मिलियन अनुयायियों ने जाति उत्पीड़न के विरोध में बौद्ध धर्म अपनाया।

1.3) सामाजिक न्याय पर फोकस: उनके सुधार भारतीय संविधान के मसौदे और महिलाओं के अधिकारों की वकालत सहित दलितों और अन्य हाशिए पर रहने वाले समुदायों के लिए मौलिक कानूनी और सामाजिक अधिकारों को सुरक्षित करने पर केंद्रित थे।

1.4) धर्मनिरपेक्ष और बहुलवादी दृष्टिकोण: अम्बेडकर ने एक धर्मनिरपेक्ष, बहुलवादी और लोकतांत्रिक भारत का समर्थन किया, धर्म या जाति की परवाह किए बिना सभी नागरिकों के लिए समानता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर जोर दिया |1

2. आरएसएस विचारधारा और विकास

1. सांस्कृतिक राष्ट्रवाद

2. हिंदू एकता और राष्ट्र: आरएसएस की स्थापना 1925 में हिंदू सांस्कृतिक एकता और हिंदू राष्ट्र के विचार को बढ़ावा देने के लक्ष्य के साथ हुई थी, जिसमें "समरसता" की अवधारणा के तहत परंपराओं और भाईचारे पर जोर दिया गया था।

3. सामाजिक संरचना का संरक्षण: ऐतिहासिक रूप से, आरएसएस ने जाति पदानुक्रम सहित हिंदू सामाजिक व्यवस्था के रखरखाव पर जोर दिया है, हालांकि बाद में इसमें दलितों के प्रति शैक्षिक और सामाजिक पहुंच के प्रयास शामिल किए गए|2

4. अम्बेडकर के प्रति प्रतिक्रिया: शुरू में, आरएसएस अम्बेडकर के सुधारों की आलोचक थी, विशेष रूप से हिंदू व्यक्तिगत कानून में उनके कानूनी हस्तक्षेप और बौद्ध धर्म में उनके सामूहिक धर्मांतरण की, जिसे वह हिंदू पहचान से दूरी के रूप में देखती थी|3

3. प्रत्यक्ष आलोचना और मौलिक मतभेद

3.1. जाति और सामाजिक न्याय

3.1.1) अम्बेडकर की आलोचना: आरएसएस के प्रति अम्बेडकर की मुख्य आपत्ति इसके द्वारा जाति व्यवस्था का कथित बचाव और निचली जातियों और दलितों के उत्पीड़न को संबोधित करने में विफलता थी। उन्होंने आरएसएस पर पिछड़ी जातियों को अधीन करने और "हिंदू राष्ट्र" की विचारधारा को बढ़ावा देने का आरोप लगाया, जो बहिष्कारक थी और सामाजिक न्याय और समानता के सिद्धांतों के साथ असंगत थी|4

3.1.2) हिंदू राष्ट्रवाद पर: अम्बेडकर ने हिंदू राष्ट्रवाद की "फासीवाद" के रूप में आलोचना की, जो गैर-उच्च जाति समुदायों को दबाता था और इस विचार को अस्वीकार किया कि भारतीय एक एकल, समरूप समुदाय बनाते हैं, जैसा कि आरएसएस द्वारा दावा किया गया था। 5

3.1.3) धर्मनिरपेक्षता: अम्बेडकर की धर्मनिरपेक्षता का दृष्टिकोण केवल धर्म और राज्य का अलगाव नहीं था, बल्कि सामाजिक असमानताओं का उन्मूलन भी था, विशेष रूप से जो धार्मिक परंपराओं में जड़ित थीं|6

3.2. प्रत्यक्ष उद्धरणों की अनुपस्थिति:

आरएसएस के बारे में अम्बेडकर के प्रत्यक्ष, शब्दश: उद्धरणों का कोई सबूत नहीं है। इसके बजाय, सभी उपलब्ध बयान हिंदू राष्ट्रवादी राजनीति, जाति पदानुक्रम, और उन विचारधाराओं के विरोध पर केंद्रित हैं, जिनका आरएसएस प्रतिनिधित्व करता है|7

4. आरएसएस का विकसित रुख और अपनाने के प्रयास

4. 1. आलोचना से रणनीतिक प्रशंसा तक

4.1.1) प्रारंभिक विरोध: आरएसएस और उसके वैचारिक सहयोगी, जैसे हिंदू महासभा, मूल रूप से अम्बेडकर के सुधारों और हिंदू धर्म और जाति व्यवस्था के प्रति उनके रुख के आलोचक थे।

4.1.2) हाल की अपनाने की प्रवृत्ति: हाल के दशकों में, विशेष रूप से भाजपा सरकारों के तहत, आरएसएस ने राष्ट्र-निर्माण और सामाजिक न्याय में उनके योगदान को उजागर करके अम्बेडकर की विरासत का दावा करने की कोशिश की है, विशेष रूप से बौद्ध धर्म में उनके धर्मांतरण को "भारत में जन्मे धर्म" के रूप में।

4.1.3) चयनात्मक प्रतिनिधित्व: इन प्रयासों को विद्वानों और दलित कार्यकर्ताओं द्वारा व्यापक रूप से अम्बेडकर की छवि को "भगवाकरण" करने के प्रयास के रूप में देखा जाता है और जाति और हिंदुत्व की उनकी कट्टर आलोचना को कम करने या विकृत करने के लिए आलोचना की जाती है|8

4.2. राजनीतिक सुविधा

4.2.1) दलित पहुंच: आरएसएस ने दलित पुजारियों के लिए पहल सहित दलितों के लिए शैक्षिक प्रयासों को बढ़ावा दिया है, लेकिन इसे अक्सर गहरे वैचारिक बदलाव को दर्शाने के बजाय रणनीतिक माना जाता है।

4.2.2) अम्बेडकरवादी आलोचना: दलित विद्वान और कार्यकर्ता तर्क देते हैं कि ये अपनाने के प्रयास अम्बेडकर के आंदोलन के मौलिक जाति-विरोधी जोर को संबोधित नहीं करते हैं और इसके बजाय राजनीतिक लाभ से प्रेरित हैं। 9

5. ऐतिहासिक और राजनीतिक तनाव

5.1. दलित आंदोलन के साथ संबंध

5.1.1) संदेह और संघर्ष: अम्बेडकर की राजनीति और दलित आंदोलन ने ऐतिहासिक रूप से आरएसएस को संदेह के साथ देखा है, इसे जाति उत्पीड़न को चुनौती देने के बजाय सामाजिक रूढ़िवाद को बनाए रखने के लिए एक शक्ति के रूप में देखा है।

5.1.2) विफल सहचर्य: आरएसएस द्वारा अम्बेडकर की विरासत के साथ जुड़ने के प्रयासों को मुख्यधारा के दलित संगठनों द्वारा बड़े पैमाने पर अस्वीकार कर दिया जाता है, जो अम्बेडकरवाद और हिंदुत्व के बीच चल रहे वैचारिक विरोध पर जोर देते हैं|10

5.2. बौद्ध धर्म में धर्मांतरण का प्रभाव

5.2.3) सामाजिक विरोध: 1956 में अम्बेडकर का बौद्ध धर्म में धर्मांतरण, जिसके बाद लगभग आधे मिलियन दलितों ने अनुसरण किया, हिंदू जाति उत्पीड़न और रूढ़िवाद के खिलाफ एक गहरा विरोध का कार्य था। आरएसएस ने शुरू में इस कदम का विरोध किया लेकिन तब से इसे अपने स्वयं के वर्णन के भीतर पुनर्व्याख्या करने का प्रयास किया है।

5.2.3) स्थायी प्रतीकवाद: अम्बेडकरवादी बौद्ध धर्म दलितों के लिए प्रतिरोध और मुक्ति का एक शक्तिशाली प्रतीक बना हुआ है, जो आरएसएस के हिंदू एकता के दृष्टिकोण से अलग है। 11

6. **तुलनात्मक ढांचा: अम्बेडकर बनाम आरएसएस:**

पहलू	अम्बेडकर का दृष्टिकोण	आरएसएस की विचारधारा	प्रमुख मतभेद
जाति व्यवस्था	उन्मूलन, पूर्ण अस्वीकरण	हिंदू सामाजिक व्यवस्था का रखरखाव, क्रमिक सुधार	मौलिक: उन्मूलन बनाम संरक्षण
धर्म	हिंदू धर्म को अस्वीकार किया, बौद्ध धर्म अपनाया	हिंदू राष्ट्रवाद, "समरसता" (भाईचारा)	धर्मनिरपेक्ष बहुलवाद बनाम सांस्कृतिक एकता
राष्ट्रवाद	समावेशी, धर्मनिरपेक्ष, सामाजिक न्याय-प्रेरित	हिंदू राष्ट्र, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद	बहुलवादी बनाम सांप्रदायिक राष्ट्रवाद
कानूनी सुधार	व्यक्तिगत कानूनों में परिवर्तनकारी बदलाव	परंपरा में कानूनी हस्तक्षेप के आलोचक	सुधारवादी बनाम परंपरावादी
विरासत अपनाना	वैचारिक सह-विकल्प का प्रतिरोध	राजनीतिक उद्देश्यों के लिए अपनाने के प्रयास	विवादित और आलोचित

7. निष्कर्ष:

1) अपरिहार्य वैचारिक विभाजन:

डॉ. बी.आर. अम्बेडकर का सामाजिक न्याय, धर्मनिरपेक्षता और जाति के विनाश का दृष्टिकोण आरएसएस के हिंदू राष्ट्रवादी एजेंडे के साथ मौलिक रूप से विपरीत है, जो, हाल के अपनाने के प्रयासों के बावजूद, पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं और बहिष्कारक राजनीति को दर्शाता है।

2) **चयनात्मक अपनाना और राजनीतिक रणनीति**:

जबकि आरएसएस खुले विरोध से चयनात्मक प्रशंसा और अम्बेडकर के प्रति प्रतीकात्मक इशारों की ओर बढ़ा है, इन्हें व्यापक रूप से राजनीतिक रूप से प्रेरित माना जाता है और वैचारिक मतभेदों के सारगर्भित समाधान को नहीं दर्शाते हैं।

3) अम्बेडकर की स्थायी विरासत:

अम्बेडकर के विचार और सक्रियता दलित आंदोलन और एक समतावादी, धर्मनिरपेक्ष भारत के दृष्टिकोण के लिए केंद्रीय बने हुए हैं। जाति और हिंदुत्व की उनकी कट्टर आलोचना को फिर से लिखने या कम करने के प्रयासों को लगातार विद्वानों, कार्यकर्ताओं और ऐतिहासिक साक्ष्यों द्वारा चुनौती दी जाती है।

****संदर्भ****

1. ([द पॉलिटी] (https://thepolity.co.in/article/173), [द हिंदू] (https://www.thehindu.com/news/national/union-social-justice-minister-calls-ambedkar-a-staunch/article66501497.ece))

2. ([ऑर्गेनाइज़र] (https://organiser.org/2023/02/19/158114/bharat/rsss-vision-for-social-harmony-the-story-so-far/))

3. ([डेक्कन हेराल्ड] (https://www.deccanherald.com/india/from-criticism-to-praise-how-rss-changed-stance-on-ambedkar-3492843))

4. ([काउंटरकरंट्स] (https://countercurrents.org/2022/04/attempts-by-rss-to-present-ambedkar-as-a-hindutva-supporter/), [दप्रिंट] (https://theprint.in/politics/why-ambedkar-remains-a-conundrum-for-rss/2425831/))

5. ([कार्नेगी एंडोमेंट] (https://carnegieendowment.org/posts/2016/04/ambedkar-against-nationalism?lang=en))

6. ([पीपल्स डेमोक्रेसी] (https://peoplesdemocracy.in/2021/0418_pd/champion-democracy-secularism-justice))
7. ([ज़ी न्यूज़] (https://zeenews.india.com/news/india/dr-br-ambedkar-five-quotes-that-show-he-was-opposed-to-rss-brand-of-hinduism_1876027.html), [द वायर] (https://m.thewire.in/article/politics/rss-ambedkar-camaraderie-fictional-narratives))
8. ([कारवां मैगज़ीन] (https://caravanmagazine.in/politics/saffronising-ambedkar-why-the-sangh-portrays-ambedkar), [फ्रंटलाइन] (https://frontline.thehindu.com/the-nation/anand-teltumbde-on-the-hollow-worship-of-ambedkar-in-bjp-rss/article66983594.ece))
9. ([इंडियन एक्सप्रेस] (https://indianexpress.com/article/india/decoding-politics-from-alarm-to-adoration-how-rss-bjp-celebrate-ambedkar-7359867/))
10. ([द वायर] (https://m.thewire.in/article/politics/rss-ambedkar-camaraderie-fictional-narratives), [जनता वीकली] (https://janataweekly.org/rss-and-ambedkar-a-camaraderie-that-never-existed/)
11. ([द अटलांटिक] (https://www.theatlantic.com/magazine/archive/2021/05/ambedkar-india-caste-buddhism/618399/))

Other References:

१) [क्यों अम्बेडकर और हिंदुत्व एक-दूसरे के विपरीत हैं] (https://thepolity.co.in/article/173)
२) [अम्बेडकर की विरासत के प्रति आलोचना से प्रशंसा तक] (https://www.deccanherald.com/india/from-criticism-to-praise-how-rss-changed-stance-on-ambedkar-3492843)
३) [राष्ट्रवाद के खिलाफ अम्बेडकर](https://carnegieendowment.org/posts/2016/04/ambedkar-against-nationalism?lang=en)
४) [आरएसएस और अम्बेडकर: एक सहचर्य जो कभी मौजूद नहीं था](https://m.thewire.in/article/politics/rss-ambedkar-camaraderie-fictional-narratives)
५) [आरएसएस द्वारा अम्बेडकर को हिंदुत्व समर्थक के रूप में प्रस्तुत करने के प्रयास](https://countercurrents.org/2022/04/attempts-by-rss-to-present-ambedkar-as-a-hindutva-supporter/)
६) [अम्बेडकर का भगवाकरण: क्यों संघ अम्बेडकर को चित्रित करता है](https://caravanmagazine.in/politics/saffronising-ambedkar-why-the-sangh-portrays-ambedkar)
७) [राष्ट्रवाद पर अम्बेडकर के विचार](https://thedaak.in/2025/04/14/ambedkars-thoughts-on-nationalism/)
८) [अम्बेडकर का हिंदूकरण और आध्यात्मिकीकरण] (https://www.epw.in/journal/2023/9/perspectives/hinduisation-and-spiritualisation-ambedkars.html)
९) [राजनीतिक विरोध के रूप में बौद्ध धर्म अपनाना] (https://www.theatlantic.com/magazine/archive/2021/05/ambedkar-india-caste-buddhism/618399/)